व्याकरण

शब्द की परिभाषाः–दो या दो से अधिक वर्णें के मेल से बनी ध्वनी ही शब्द है।शब्द के आठ भेद हाते हैं!

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया

5. क्रया विशेषण 6. सम्बन्ध बोधक 7. समुच्चय बोधक 8. विस्मयादि बोधक

1. संज्ञा

परिभाषा किसी भी प्रणी,व्यक्ति,वस्तु,स्थान, भाव आदी का बोध करानेवाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।संज्ञा के तीन भेद होते हैं–

1. जातिवाचक संज्ञा–जो शब्द संपूर्ण जाति,वर्ग या समुदाय की जानकारी देते हैं, वे जाति वाचाक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे सैनिक,पहाड, पेड, शहर, पशु, कक्षा, आदी।

2. व्यक्ति वाचाक संज्ञा–जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति,स्थान अथवा वस्तु,बोध करवाएॅ,वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलते हैं।जैसे गायत्री,गांगा,महाभारत,चेन्नाई, दिल्ली,महात्मा गॉधी

3. भाववाचक संज्ञा– जो शब्द स्थूल रुप में तो किसी वस्तु का बोध नहीं करवात किंतु उन्हें महसूस किया जा सकता है,वे भाव ही भाववाचक संज्ञा है।गुण,दोष,भाव,दशा,,अवस्था,स्वभाव आदी भाव का बोध करनवानेवाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं

2. सर्वनाम

परिभाष–संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद –सर्वनाम छह भेद होते हैं।

1.पुरुषवाचक सर्वनामः–बोलनेवाले सुननेवाले या किसी अन्य व्यक्ती का बोध करानेवाले सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।पुरुषवाचाक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–

1.उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम –बोलनेवाला–मैं,हम,मेरा,हमारा,मुझे,,हमें।

2.मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम–सुननेवाला – तू,तुम,तुम्हारा,आप,आपका।

3.अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम–अन्यव्यक्ति–वह,वे,उसे,उन्हें,आपका।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम के द्धरा किसी पास या दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चय रुप से बोध करवाया जाए,उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।जैसे –यह,वह।

3.अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जब किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु का निश्चय न हो तब अनिश्चयवाचाक सर्वनाम कहते हैं।जैसे–कोई,कुछ।

1.कोई नही आया।

2.कुछ ले आईए।

कोई और कुछ किसके लिए आया है,यह पता नहिं, अतःअनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं

4.प्रश्नवाचक सर्वनाम–संज्ञा के विषय में जिन शब्दों से प्रश्न किया जाए वे प्रश्नवाचाक सर्वनाम कहलाते हैं।जैसे–कौन,किसे, क्या ,किसने।

क्या कर रहे थे ?

किसने बुलया था ?

5.संबंधवाचक सर्वनाम–वाक्य में संबंध बतानेवाले सर्वनाम ही संबंधवाचक सर्वनाम होते हैं।जैसे –जो,जिसे,जिसने।

जो सत्य बोलते हैं,वह सदा खुश रहता है।

6.निजवाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम अपनेआप का बोध करवाते हैं,वे निजवाचक सर्वनाम हैं।जैसे स्वयं,अपने आप,खुद स्वतः।

1.अपना काम स्वयं ही करना चाहिए।

2.वह अपने आप खडा होने लगा है।

विशेषण

परि्भाष–संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतानेवाला शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण के भेदः–विशेषण के चार भेद किए जा सकते हैं–

1.गुणवाचकविशेषण–संज्ञा या सर्वनाम के गुण–दोष, दश–स्थिति,आकार–प्रकार आदि का बोध करवानेवाला विशषण गुणवाचक विशेषण हौते।जैसे–

1.सोनम सुंदर लडकी है।

2.हमारे घर के बाहर विशाल वृक्ष है।

2.संख्यावाचक विशेषण–जिन वस्तुओं की गिनती संभव है,उनकी संख्या का बोध करवानेवाले विशेषण संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। यह संख्याएँ निश्चत अनिश्चत हो सकता हैं।

1.सडक के किनारे हैकडो पेड लगे।

3.परिमाणवाचक विशेषणः–जो विशेषण विशेष्य के नाप–माप– तोल की जानकारी देते हैं, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।जैसे–

1.बच्चे को प्रतिदनि एक लीटर दूध पीना चाहिए।

2.चादर की लंबाई दो मीटर है।

4.सार्वनामिक विशेषण– जब कोई सर्वनाम संज्ञा से पहले आकर विशेषण का आकर का काम करे तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।जैसे

1.वह लडकी नही आई। 2.यह मेज नई है।

4.क्रिया

परिभाष–जो पद किसी काम के करने या होने का बोध करवाएँ,उन्हे क्रिया कहते हैं।

क्रिया के दो भेद होते हैं–

1.अकर्मक क्रिया

उदा–1.कुनिया सोती है। 2. रहमान हॅसता है।

सोती है, हॅसता है क्रियाओ का फल कर्ता पर पडा कर्म पर नही। अतः ये अकर्मक क्रियाएँ है।

2.सकर्मक क्रिया–

उदा– 1.नेहा पुस्तक पडती है। 2.हरीश सेब खाता है।

इन वाक्यों में पढती है और खाता हैं।यहॉ क्रिया का फल कर्म पर पडता है अैर क्रिया कर्म की अपे़क्षा भी रखती है।अतः सकर्मक क्रिया कहते है।

5.क्रिया विशेषण

परिभाषा– जो शब्द की विशेषता को प्रकट करते हैं,उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

विशेषण के निम्न लिखित चार भेद होते हैं।

1.काल वाचक 2.स्थान वाचक 3. परिमाण वाचक 4.रीति वाचक

1. कालवाचक विशेषण–जो श्ब्द के समय विशेषता को प्रकट करते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।जैसे

उदा–1. आप को अभी मिलना चाहिए। 2.वह लगातर परि्श्रम कर कहा है।

2,स्थानवाचक विशेषण –जो शब्द क्रिया की स्थान सम्बन्धी विशेषता बताते हैं, उन्हें स्थान वाचक विशेषण कहते हैं।

उदा–1.भीतर आईए ओर मेरे पास बैठए। 2.कुर्सी को एक ओर रख दो।

3.परिमाणवाचक विशेषण– जो शब्द क्रिया की परिमण सम्बन्धी विशेषता को प्रकट करते हैं, उन्हें परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

उदा –उतना खाओ, जितना पच जाए। 2. वह बहुत काम करता है।

4.रीति वाचक विशेषण–जो शब्द किसी की रीति सम्बन्धी विशेषता को प्रकट करते,उन्हें रीति वाचक विशेषण कहते हैं।

उदा – 1. धीरे–धीरे आ गया। 2.वह अचानक आ गया।

6.सम्बन्ध बोधक

परिभाष– जो शब्द वाक्य में आये हुए दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्द का बोध कराते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक कहते हैं।

उद–1.राम के साथ सीता भी वन गई । 2. सुरेन्द्र दिन भर काम करता रहा।

सम्बन्ध बोधक के भेद तथा सम्बन्ध बोधक शब्दः–

1.काल वाचकः–पहले,पीछे, बाद,आगे। 2.स्थानवाचकः–बाहर.भीतर,उप्पर.नीचे।

3..साधनावाचक– निमित द्धारा,जरिये 4.दिशावाचक– निकट,दूर,पास,ओर,सामने।

5.विरोध सूचक– विपरीत,विरुद्ध,प्रतिकूल। 6.समता सूचक–अनुसार,समान,तरह।

7.हेतु सूचक –रहित,सिवा,अतिरिक्त 8.सहचर सूचक– साथ,संग,समेत।

7.समूच्चय बोधक

परिभाषाः–जो शब्द दो शब्दों या दो वाक्यें को मिलाते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक या योजक भी कहते हैं।

उदा– मोहन के पिता जी धनवान् हैं, पर है कंजूस।

माला ने बहुत परिश्रम किया,परन्तु पास न हो सकी।

8.विस्मयादि बोधक

परिभाषा–जिन शब्दों से हर्ष,शेक,विस्मय,ग्लानि,घुणा का बोध होता हैं,उन्हे विस्मयादि बोधक कहते हैं।

1.अरे!आप इतनी जल्दी आ गए!

2.उफ!वह तो अचानक चल बसा!

निचे दिये गए प्रश्नें के उत्तर दिजीए।

1. 'मेघ' शब्द का पर्याय शब्द लिखिए।
2. 'गगन' शब्द का अर्थ लिखिए।
3. 'तम' शब्द का अर्थ लिखिए।
4. 'सावन' शब्द का पर्याय लिखिए।
5. 'बखान' शब्द का अर्थ लिखिए।
6. 'भूमि' शब्द का अर्थ लिखिए।
7. 'त्यौहार' शब्द का अर्थ लिखिए।
8. 'जस' शब्द का पर्याय शब्द क्या है।
9. 'संचित' करना शब्द का अर्थ क्या है।
10. 'पथ' शब्द क्या अर्थ क्या है।

निचे दिये गए शब्दों का विलोम शब्द लिखिए।

1. 'भीतर' शब्द का विलोम शब्द लिखिए।
2. 'गिरना' शब्द का विलोम शब्द क्या है।
3. 'मिलना' शब्द का विलोम शब्द लिखिए।
4. 'पवित्र' शब्द का विलोम शब्द क्या है।
5. 'पुराना' शब्द का विलोम शब्द लिखिए।
6. 'आधिक' शब्द का विलोम शब्द क्या है।
7. 'अगली' शब्द का विलोम शब्द क्या है।
8. 'नजदिक' शब्द का विलोम शब्द क्य है।
9. 'सफलता' शब्द का विलोम शब्द क्या है।
10. 'समाप्त करना' शब्द विलोम शब्द क्या है।

निचे दिये गए शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए।

1. 'गौरवान्वित' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
2. 'भरतीय' शब्द का संधि विच्छेद क्या है।

3. 'पदावली' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
4. 'कृष्णोपासक' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
5. 'निराशा' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
6. 'दुर्भाग्य' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
7. 'निश्वास'शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
8. 'अत्यंत' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
9. 'मनवाकृत' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
10. 'पर्यावरण' शब्द का संधि विच्छद कीजिए।

निचे दिये गए शब्दों का प्रत्येय पहचानिए।

1. ''सुंदरता'' शब्द का प्रत्येय लिखिए।
2. ''पुलकावली'' शब्द का प्रत्येय पहचानिए।
3. ''अभागिन'' शब्द का प्रत्येय लिखिए।
4. ''भडकीला'' शब्द का प्रत्येय लिखिए।
5. ''दुकानदार'' शब्द का प्रत्येय क्या है।
6. ''दुनिया'' शब्द का प्रत्येय लिखिए।
7. ''अहिसावादी'' शब्द का प्रत्येय पहचानिए।
8. ''सभ्यता'' शब्द का प्रत्येय लिखिए।
9. ''अहिंसावाद'' शब्द का प्रत्येय पहचानिए।
10. ''भाग्यवान'' शब्द का प्रत्येय लिखिए।

निचे दिये गए शब्दों का उपसर्ग पहचानिए।

1. ''बेसमझ'' शब्द का उपसर्ग लिखिए।
2. ''परलोक'' शब्द का उपसर्ग पहचानिए।
3. ''अनगिनित'' शब्द का उपसर्ग क्या है।
4. ''अहिंसा'' शब्द का उपसर्ग लिखिए।
5. ''विनम्रता'' शब्द का उपसर्ग क्या है।
6. ''अपहरण'' शब्द का उपसर्ग लिखिए।
7. ''साक्षरता'' शब्द का उपसर्ग पहचानिए।
8. ''प्रतिबिंब'' शब्द का उपसर्ग पहचानिए।
9. ''निराशा'' शब्द का उपसर्ग लिखिए।
10. ''विजीत'' शब्द का उपसर्ग लिखिए।

निचे दिये गए शब्दों का समास विग्रह कीजिए।

1. ''नर–समाज'' शब्द का समास विग्रह कीजिए।
2. ''भुजबल'' शब्द का समस विग्रह कीजिए।
3. ''बहरमासा'' शब्द का समास विग्रह कीजिए।

4. ''भावसागर'' शब्द का समास विग्रह पहचानिए।
5. ''राम–लक्ष्मण'' शब्द का समास विग्रह पहचानिए।
6. ''प्रश्नोत्तर'' शब्द का समास विग्रह लिखिए।
7. ''युवाशक्ति'' शब्द का समास विग्रह लिखिए।
8. ''साधु–संत'' शब्द का समास विग्रह पहचानिए
9. ''विश्वशांति''शब्द का समास विग्रह कीजिए।
10. ''भरतवासी'' शब्द का समास विग्रह कीजिए।

कारक

परिभाष–संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रुप से उसका सम्बन्ध के अन्य शब्दों से ज्ञात हो,उसे कारक कहते हैं।

करक के भेद–

1.कर्ता करक– वाक्य में कार्य करने को कर्ता कहते हैं। शब्द के जिस रुप से कार्य करने वाले का बोध हो उसे कर्ता करक कहते हैं। इसका प्रत्येय ''ने'' है।

उदाः बढई ने मेज बनाया।

2.कर्म कारक– कर्त द्धारा किए जा रहे कार्य का जिस पर प्रभाव पडता है,उसे कर्म कहते हैं। उदा–शब्द के जिस रुप से यह बोध हो कि उस पर क्रिया का फल पड रहा है,उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका चिन्ह ''को'' है।

उदाःमॉ ने बेटे को बुलाया।

3.करण कारक– साधना को करण कहा जाता है।कर्ता जिस साधना से कार्य सम्पन्न करता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका चिन्ह ''से'' ''के द्धरा'' है।

उदा–उसने चाबि से ताला खोला।

4.सम्प्रदान कारक– वाक्य मे क्रिया का कोई लक्ष्य होता है ,जिसे कुछ दिया जाना है अथवा जिसके लिए कुछ किया जाना है। इस लक्ष्य का बोध कराने वाला शब्द सम्प्रदान कारक कहते हैं। इसका चिन्ह ''के लिए'' ''को''आदि हैं।

उदा–मैंने मित्र के लिए पेन खरीदा।

5.आपादान कारक–आपादान से तात्पर्य पृथकता है।वाक्य मे जहॅ किसी व्यक्ति या वस्तु के पृथक होने का बोध हो, तो सेज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रुप अपादान कारक कहते है।इसका चिन्ह ''से'' है।

उदा– मेज से पुस्तक गिर गई।

6.सम्बन्द कारक–वाक्य मे प्रयुक्त व्यक्ति,वस्तु,वस्तु आदी का सम्बन्द अन्य व्यक्तियों अथवा वस्तुओं से प्रकट करने वाले संज्ञा या सर्वनाम रुप को सम्बन्द कारक कहते हैं।इसका चिन्ह ''का'' ''के'' ''की'' है।

उदा– यह कलम उसका है।

7.अधिकरण कारक–संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रुप जो क्रिया के स्थान का बोध कराए,अधिकरण कहलाता है।इसका चिन्ह ''में'' है।

उदा–कौआ मकान की मुँडेर में है।

8.सम्बोधन कारक–सम्बोधन का अर्थ है पुकारना।संज्ञा के जिस रुप से पुकारे जाने का बोध हो, उस सम्बोधन कारक कहते हैं।इसका चिन्ह ''हे'' ''अरे'' ''ओ'' आदी हैं।

उदा–अरे श्याम , तुम कब अए

समास

परिभाष– समास दो या दो से अधिक समासिक शब्दो को परस्पर मिलकर एक शब्द बना देने की विधि को समास कहते है। उदा–राजा का महल :राजमहल

समास विग्रहः समस्त पद को खण्डित करके पहले जैसी अवस्त में पहुँचा देने की स्थिति को समास कहते है। जैसे–राजमहल को तोडकर राजा का महल कर देने को विग्रह कहते हैं।

समास के छः भेद होते हैं।

1.तत्पुरुष समास–जिस समास का दूसरा पद प्रधान है तथा कारक के चिन्हों द्वारा अलग किया जाय उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदः1. राज कुमार– राजा का कुमार, 2.देश भक्ति– देश के भक्ति

2.अव्यायी भाव समास– जिस सामाजिक शब्द का पहला पद अव्यय है और क्रिया विशेषण रुप में प्रयुक्त है उसे अव्ययी भाव समास कहते है।इसका पहला पद नही बदलता है।

उदाः 1.अजीवन–जीवन भर, 2.प्रतीदिन–हर दिन, 3.यथा शक्ति–शक्ति के अनुसार,

3.द्वन्द समास–जिस समास के दोनों पद समान हो।तथा और शब्द से अलग किये जाए उन्हे द्वन्द समास कहते हैं।

उदा–1.सीता राम,सीता और राम, 2.पाप पुण्य–पाप और पुण्य।

4.द्विगु समास–जहॅा पहला पद संख्यावाची है और समस्त पद समूह वाची बन गाया हो तो वहॅ द्विगु समास होते है।

उदाः चौराह–चार रास्तों का समूह, 2.नौ रात्रि–नौ रातों का समूह

5.कर्मधारय समास–जिस समास को विग्रह करने पर उसके पहले पद में विशेषण–विशेष्य या उपमान उपमेय हो तो वह समास कर्मधारय समास कहते है।

उदाः चरण कमल– चरण जैसे कमल, 2.नरसिंह–नरों में सिंह के समान,

6.बहुव्रीहि समास–जिस समास के विग्रह करने पर कोई प्रधान न हो तथा अपने से भिन्न किसी विशेष संज्ञा या विशेषण हो,उसे बहुव्रिहि समास कहते हैं।
उदा–1.दशानन– दश अनन है जिसके –रावण
2.लम्बोदर– लम्बा हो उदर जिसका –अर्थात गणेश

मुहावरे

परिभाषः भाष को स्पस्ट और प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। जो आत सीधे –साधे शब्दों से कही जाने पर कहने बाले का भाव पूरा–पूरा प्रकट नहा करती,वही बात मुहावरें का प्रयोग करके सुचारु रुप से प्रकट की जा सकती है।मुहावरे एक वाक्यांश है जो साधारण अर्थ का बोध न करके किसी विशेष अर्थ बोध करवाते है।मुहावरे के अंत में प्रायःकिसी क्रिया का सामान्य रुप लगा होता है।मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता ,सौन्दर्य, स्वाभाविकता आ जाती है।